IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अरुणाचल प्रदेश की तांग्सा जनजाति की मुक्लोम उप-जनजाति के 'कुंगटॉम' लोकपर्व के लोकगीतों में निहित सामाजिक-सांस्कृतिक दर्शन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

तांग्मी चांग्मी
अतिथि संकाय
वांग्चा राजकुमार सरकारी महाविद्यालय
देवमली, तिराप, अरुणाचल प्रदेश

प्रस्तावना

'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्' अर्थात् जिसके माध्यम से संसार और जीवन को देखा-समझा जाए, वही दर्शन है। जीवन की गहराइयों को समझने, उसके रहस्यों को उद्घाटित करने तथा यथार्थ अथवा सत्य का तार्किक विवेचन करने की प्रक्रिया दर्शन कहलाता है। दार्शनिक दृष्टि मनुष्य में विवेक का विकास करती है, जिसके द्वारा वह सही-गलत के मध्य भेद करने में सक्षम होता है। दर्शन का स्वभाव जिज्ञासात्मक होता है; दार्शनिक व्यक्ति स्थिर संतोष की अवस्था में नहीं रहता, बल्कि सतत् ज्ञान-अन्वेषण की प्रक्रिया में संलग्न रहता है। अंग्रेज़ी में दर्शन के लिए प्रयुक्त शब्द Philosophy यूनानी भाषा के दो शब्दों Philos (प्रेम) और Sophia (ज्ञान) से मिलकर बना है, जिसका तात्पर्य ज्ञान से प्रेम करने वाले व्यक्ति से है।

भारत विविध संस्कृतियों, भाषाओं, धर्मों और जातीय-जनजातीय समुदायों से युक्त 'अनेकता में एकता' का जीवंत उदाहरण है। यहाँ प्रत्येक समाज की अपनी विशिष्ट जीवन-पद्धति, रीति-रिवाज़, सामाजिक मान्यताएँ, पर्व-त्यौहार और सांस्कृतिक परंपराएँ हैं। इस सांस्कृतिक विविधता के कारण किसी भी समाज के जीवन-मूल्यों और दृष्टिकोण को समझना सरल नहीं है। ऐसी स्थिति में लोकसाहित्य विशेषतः लोककथाएँ, लोकनाट्य, लोकगीत और लोककहावतें सम्बंधित समाज के सामाजिक एवं सांस्कृतिक दर्शन को समझने का सशक्त माध्यम बनते हैं। लोक साहित्य के माध्यम से समाज की सामूहिक चेतना, विश्वास-प्रणाली और जीवन-अनुभवों की प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होती है।

लोकगीत लोकसाहित्य का एक प्रमुख और सशक्त अंग है, जिसे किसी एक निश्चित परिधि में सीमित नहीं किया जा सकता। ये गीत ग्रामीण और जनजातीय समाजों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक परंपरा के माध्यम से सुरक्षित और संप्रेषित होते आए हैं। लोकगीत किसी समाज की सांस्कृतिक मौखिक संपत्ति होते हैं, जिनमें लयात्मकता और गेयता का गुण निहित रहता है। इनके माध्यम से लोग अपने सुख-दुख, आशा-निराशा, हर्ष-विषाद तथा सामूहिक अनुभवों की अभिव्यक्ति करते हैं। अधिकांश लोकगीत अलिखित होते हैं, किंतु यही मौखिक ज्ञान समाज की नई पीढ़ी को मार्गदर्शन प्रदान करता है तथा उनमें सामाजिकता, सहयोग और सामूहिकता की भावना का विकास करता है।

अरुणाचल प्रदेश भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण राज्य है, जिसे 20 फ़रवरी 1987 को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। यह राज्य सांस्कृतिक और जनजातीय विविधता की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है, जहाँ लगभग 26 प्रमुख जनजातियाँ तथा उनके अंतर्गत सौ से अधिक उप-जनजातियाँ निवास करती हैं। ये जनजातियाँ राज्य के विभिन्न जिलों जैसे तवांग, वेस्ट कामेंग, पापुम पारे, लोअर एवं अपर सुबनसिरी, चांगलांग, कुरुंग कुमेय, वेस्ट एवं ईस्ट सियांग आदि में विस्तृत रूप से फैली हुई हैं।

तांग्सा जनजाति अरुणाचल प्रदेश के चांगलांग जिले की प्रमुख जनजातियों में से एक है, जिसका विस्तार असम के तिनसुकिया जिले के मार्घेरिटा उप-विभाग तथा भारत-म्यांमार सीमा के पार सागाइंग क्षेत्र तक पाया जाता है। तांग्सा जनजाति को सामान्यतः दो प्रमुख समूहों पंगवा और तांगवा में वर्गीकृत किया जाता है। मुक्लोम उप-जनजाति तांगवा समूह के अंतर्गत आती है, जो मुख्यतःचांगलांग और

मियाओ उप-विभागों के विभिन्न क्षेत्रों में निवास करती है। पारंपरिक रूप से झूम खेती मुक्लोम समुदाय की प्रमुख जीविका रही है, जिसका उद्देश्य व्यावसायिक न होकर आत्मनिर्भर जीवन यापन रहा है। यह समुदाय कृषि देवता रंगफरा की आराधना करता है और यह विश्वास रखता है कि संसार की समस्त खाद्य सामग्री उन्हीं की कृपा से प्राप्त होती है।

मुक्लोम समुदाय के सांस्कृतिक जीवन में लोकगीतों का विशेष महत्व है। इनके माध्यम से समुदाय ने सदियों से चली आ रही अपनी सांस्कृतिक परंपराओं, सामाजिक मूल्यों और धार्मिक मान्यताओं को संरक्षित रखा है। विशेषतः कुंगटॉम (कुह) पर्व से जुड़े लोकगीत मुक्लोम समाज के सामाजिक एवं सांस्कृतिक दर्शन को समझने का महत्वपूर्ण स्रोत है। प्रस्तुत शोध आलेख इन्हीं लोकगीतों के माध्यम से मुक्लोम उप-जनजाति के सामाजिक और सांस्कृतिक दर्शन का विश्लेषण करता है।

महत्व

आधुनिकता और वैश्वीकरण की तीव्र प्रक्रिया ने आदिवासी समाज की पारंपरिक सांस्कृतिक संरचना को गहरे रूप में प्रभावित किया है। इसके परिणामस्वरूप मौखिक परंपराओं पर आधारित लोकगीत, जो कभी सामुदायिक जीवन के अभिन्न अंग हुआ करते थे, आज अस्तित्व के संकट से जूझ रहा है। मुक्लोम उप-जनजाति के संदर्भ में यह समस्या गंभीर है, क्योंकि यहाँ लोकगीतों का संरक्षण किसी लिखित परंपरा में न हो कर केवल मौखिक स्मृति और सामूहिक गायन के माध्यम से ही संभव रहा है। प्रस्तुत शोध आलेख में मुक्लोम समुदाय में प्रचलित लोकगीतों को आधार बनाकर उसका विश्लेषण किया गया है, जिससे इस समुदाय की सांस्कृतिक धरोहर तथा सामाजिक जीवन-दृष्टि को समझा और सुरक्षित किया जा सके।

समकालीन समय में मिश्रित संस्कृति तथा बाज़ार प्रेरित मनोरंजन के प्रभाव से अनेक लोकगीतों के स्वरूप में विकृति देखी जा रही है, जिससे उनकी मौलिकता, मर्यादा और सांस्कृतिक गरिमा प्रभावित हो रही है। ऐसे परिदृश्य में यह शोधकार्य पारंपरिक और शुद्ध लोकगीत के संकलन एवं प्रलेखन की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जो भविष्य में मुक्लोम समुदाय की सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण एवं पुनर्स्थापन के लिए आधार प्रदान कर सकता है।

शोध-पद्धति

अध्ययन के लिए चयनित लोकगीत मुक्लोम उप-जनजाति के कुंगटॉम पर्व से संबंधित हैं, जिनका संग्रह क्षेत्रीय अध्ययन (fieldwork) के माध्यम से किया गया है। लोकगीतों का संकलन पारंपरिक गायक-गायिकाओं, गाँव के बुजुर्गों तथा सामुदायिक आयोजनों के दौरान मौखिक रूप में किया गया, जिससे उनकी मौलिकता और प्रामाणिकता बनी रहे। संकलित लोकगीतों को उनके मूलपाठ के रूप में प्रस्तुत करने के पश्चात अर्थानुगामी हिंदी अनुवाद किया गया है, ताकि भाषिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ स्पष्ट हो सकें। यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति (Descriptive–Analytical Method) पर आधारित है, जिसके माध्यम से लोकगीतों में निहित सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थों की व्याख्या की गई है।

मूल आलेख

कुंगटॉम त्यौहार मुक्लोम उप-जनजाति के जीवन में विशेष महत्व रखने वाला एक कृषि-आधारित पर्व है। यह पर्व झूम खेती में उगाई गई बाजरा (Millet) की फसल की कटाई पूर्ण होने के पश्चात सामान्यतः अगस्त माह में मनाया जाता है। इस पर्व के संपन्न होने के बाद ही समुदाय के लोग नवीन फसल से प्राप्त धान को भोजन के रूप में ग्रहण करना प्रारंभ करते हैं तथा उससे निर्मित पारंपरिक चावल की बीयर (शराब) का सेवन किया जाता है।

कुंगटॉम त्यौहार को ग्रीष्मऋतु से शीतऋतु की ओर होने वाले मौसमी परिवर्तन का प्रतीक माना जाता है। मुक्लोम समुदाय में मौसम के परिवर्तन की पहचान परंपरागत रूप से प्राकृतिक संकेतों के आधार पर की जाती रही है। विशेषरूप से‘ कोक-खोट-खोट’ नामक टिड्डे की विशिष्ट ध्वनि को शीतऋतु के आगमन का सूचक माना जाता है। चूँकि कुंगटॉम पर्व सर्दियों के आरंभ से पूर्व आयोजित किया जाता है, इसलिए इससे संबंधित लोकगीतों की प्रारंभिक पंक्तियों में शीतऋतु के आगमन का संकेत मिलता है, जिसे कोक-खोट-खोट की ध्वनि के माध्यम से प्रकृति द्वारा की गई घोषणा के रूप में देखा जाता है।

कुंगटॉम को स्वच्छता एवं शुद्धता से जुड़ा पर्व भी माना जाता है। इस अवसर पर गाँव के लोग अपने घरों, आँगनों तथा आस-पास के संपूर्ण क्षेत्र की सामूहिक रूप से सफ़ाई करते हैं। यह प्रक्रिया केवल भौतिक स्वच्छता तक सीमित न हो कर सामाजिक और सांस्कृतिक शुद्धता की भावना को भी अभिव्यक्त करती है, जो समुदाय की सामूहिक चेतना को सुदृढ़ करती है। इस पर्व के दौरान सामूहिक प्रार्थनाएँ की जाती हैं, जिनमें अच्छी फसल, भूमि की उर्वरता तथा भविष्य में भी कृषि समृद्धि की कामना व्यक्त की जाती है। कुंगटॉम अवसर पर गाए जाने वाले लोकगीतों में पर्व की तैयारियों, उससे उत्पन्न सामूहिक आनंद तथा इस पर्व के मनाए जाने के कारणों का वर्णन मिलता है। इस प्रकार कुंगटॉम से संबद्ध लोकगीत कृषि जीवन, ऋतु परिवर्तन, सामुदायिक सहभागिता और प्रकृति के साथ मानवीय संबंधों को अभिव्यक्त करने का सशक्त सांस्कृतिक माध्यम बनते हैं।

कुंगटॉम लोकगीत

शोंगवांग वांग्वा ओ…
आह…आह…आह…आह…आबोह थालराम ओ…
आबोह आफा ओ…ओह…ओह…ओह…
आबोह आफा साओ…
आबोह थाल खुंग रिम तानिया…
नाह चेंग ताम चा तू…उह…उह…उह…उह…

इस अंश में गाँव के उन बुजुर्गों को संबोधित किया जा रहा है, जो मूल निवासी हैं तथा पारंपरिक ग्राम परिषद जिसे मुक्लोम समाज में 'पांग' कहा जाता है, में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामूहिक गायन के माध्यम से यह भाव व्यक्त किया जाता है कि सभी गाँववासी इसी गाँव की संतान हैं और गाँव के बुजुर्ग उत्साह एवं उल्लास के साथ समस्त ग्रामवासियों को कुंगटॉम पर्व में सहभागी बनने का आह्वान कर रहे हैं।

चेंगरे डांग डांग चा
आह…आह…आह…आह…ताब बान ना चा ओए…
पोरु ताब पान ता
आह…आह…आह…आह…पोरु से पान ता…
माजितियो…पांगते…
माजितियो…पांगते… (हू हाई…)

इस भाग में सामूहिक स्वर में यह उद्घोष किया जा रहा है कि सभी लोग ध्यानपूर्वक सुनें, क्योंकि अब त्यौहार का समय आ चुका है। गीत के माध्यम से उन स्त्रियों को संबोधित किया जा रहा है, जो निरंतर घर-परिवार और बच्चों की देखभाल में संलग्न रहती हैं। इसमें यह संकेत भी दिया गया है कि मानसून के फूल खिल उठे हैं और नई ऋतु का आरंभ हो गया है। इसी शुभ अवसर पर गाँव के सभी युवक एकत्र होकर उनके घर आए हैं, ताकि कुंगटॉम पर्व को सामूहिक उल्लास के साथ मनाया जा सके।

पांगते अथान लोंगेह…
आबोह थाल राम खो रा…
चेंगरे डांग डांग चा ती…
मसिप ती…लामकांग…
मसिप ती…लामकांग… (हू हाई…)

इस अंश में गाँव के सभी युवक एकजुट होकर पारंपरिक कुंगटॉम पर्व में उत्साहपूर्वक सम्मिलित होते दिखाई देते हैं। उन्होंने सामूहिक श्रम के माध्यम से गाँव के घरों के आसपास स्थित जंगलों और फैली हुई गंदगी की सफ़ाई की है। साथ ही आवागमन के मार्गों के किनारे उगी घास और झाड़ियों को काटकर रास्तों को स्वच्छ तथा सुगम बनाया गया है

पांगते अथान लोंगेह…
आह…आह…आह…आह…आबोह थालराम दो…
सेजित तियो…पाते…
सेजित तियो…पाते… (हू हाई…)

इस शुभ अवसर पर गाँव के सभी लोग एक स्थान पर एकत्र हुए हैं। गाँव का मार्गदर्शन करने वाले बुजुर्गों ने इस पावन पर्व का संदेश समस्त ग्रामवासियों तक पहुँचा दिया है। अतःसभी लोग इस शुभ दिन पर परस्पर मंगल कामनाएँ व्यक्त करने हेतु एकत्रित हुए हैं।

शोंगवांग नाचा ओए
पांगते अथान लोंग
साकाह जित्ती रिले…आह…आह…आह…आह…
मानत उले सेमलांग…
मानत उले सेमलांग…
मानत उले सेमलांग… (हू हाई…)
सेमलांग नात्तु रिले
पांगते अथान लोंग ओए
माजित तियो लोहकु…
माजित तियो लोहकु… (हू हाई…)

इस अंश में घर की उन स्त्रियों को संबोधित किया जा रहा है, जो निरंतर गृहस्थ जीवन की देखभाल और घरेलू कार्यों में संलग्न रहती हैं। गीत के माध्यम से यह बताया जाता है कि खेतों में धान की फसल अत्यंत उत्तम हुई है और उसे परिश्रमपूर्वक खेतों से घर तक सुरक्षित रूप से पहुँचा दिया गया है। इसके साथ ही यह भी उद्घोषित किया जाता है कि गाँव के मध्य स्थित जंगलों और झाड़ियों को सामूहिक श्रम से स्वच्छ कर दिया गया है, जिससे ग्राम परिसर पवित्र बना रहे और किसी भी प्रकार के अनिष्ट अथवा दुष्टशक्तियों की आशंका न रहे। अंत में स्त्रियों से विनम्रतापूर्वक निवेदन किया जाता है कि वे इस शुभ अवसर पर पारंपरिक आतिथ्य संस्कार के रूप में चावल से निर्मित स्थानीय पेय (शराब) के माध्यम से उनका स्वागत करें।

कुंगटॉम लोकगीतों में निहित सामाजिक दर्शन

कुंगटॉम पर्व से संबद्ध मुक्लोम उप-जनजाति के लोकगीत सामाजिक दर्शन की उस मौखिक परंपरा को अभिव्यक्त करते हैं, जिसमें समाज की संरचना, भूमिकाएँ और मूल्य सहज रूप से विन्यस्त दिखाई देते हैं। इन लोकगीतों में स्त्री की उपस्थिति केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था, पारिवारिक स्थिरता और सांस्कृतिक निरंतरता की सक्रिय संवाहक के रूप में उभरती है; पारंपरिक आतिथ्य संस्कार में उसकी भूमिका सामाजिक विनिमय और सामुदायिक सौहार्द का प्रतीक बन जाती है। श्रम और कृषि को इन गीतों में मात्र जीविकोपार्जन का साधन न मानकर सामाजिक प्रतिष्ठा और सामूहिक अस्तित्व के आधार के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ सामूहिक श्रम के माध्यम से भूमि, जंगल और ग्राम परिसर को शुद्ध और व्यवस्थित करने की प्रक्रिया सामाजिक अनुशासन का रूप ग्रहण कर लेती है। सामुदायिक जीवन की अवधारणा इन लोकगीतों में केंद्रीय है, जिसमें ग्राम परिषद (पांग) के बुजुर्गों का मार्गदर्शन, युवकों की सक्रिय भागीदारी और स्त्रियों का सहयोगात्मक योगदान एक समन्वित सामाजिक इकाई का निर्माण करता है। इसके साथ ही स्वच्छता, परिश्रम, बुजुर्गों के प्रति सम्मान, प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व और सामूहिक उत्तरदायित्व जैसे नैतिक मूल्य लोकगीतों के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित होते हैं, जिससे समाज में नैतिक संतुलन और सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहती है। इस प्रकार कुंगटॉम लोकगीत मुक्लोम समाज के सामाजिक दर्शन को न केवल प्रतिबिंबित करते हैं, बल्कि उसे सुदृढ़ करने वाले वैचारिक उपकरण के रूप में भी कार्य करते हैं।

कुंगटॉम लोकगीतों में निहित सांस्कृतिक दर्शन

कुंगटॉम पर्व से जुड़े मुक्लोम उप-जनजाति के लोकगीत सांस्कृतिक दर्शन की उस जीवंत परंपरा को अभिव्यक्त करते हैं, जिसमें प्रकृति, समाज और विश्वास प्रणाली के बीच गहरा अंतर्संबंध दिखाई देता है। इन लोकगीतों मे ऋतु परिवर्तन, कृषि चक्र और प्राकृतिक संकेतों को सांस्कृतिक चेतना के अनिवार्य घटक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ कोक-खोट-खोट जैसे जीव-जंतु भी सांस्कृतिक प्रतीकों का रूप धारण कर लेते हैं। स्वच्छता, शुद्धता और सामूहिक श्रम जैसी क्रियाएँ केवल व्यावहारिक आवश्यकता न रहकर सांस्कृतिक अनुष्ठान का स्वरूप ग्रहण कर लेती हैं, जो समुदाय को भौतिक और आध्यात्मिक दोनों स्तरों पर संतुलित बनाए रखती हैं। लोकगीतों में सामूहिक गायन, अनुष्ठानिक उल्लास और पारंपरिक आतिथ्य संस्कार सांस्कृतिक निरंतरता के माध्यम बनते हैं, जिनके द्वारा मूल्य, विश्वास और आचार-विचार नई पीढ़ी तक मौखिक रूप में संप्रेषित होते हैं। इस सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री, पुरुष, बुजुर्ग और युवा सभी की सहभागिता संस्कृति को एक गतिशील और साझा अनुभव के रूप में स्थापित करती है। इस प्रकार कुंगटॉम लोकगीत मुक्लोम समाज की सांस्कृतिक पहचान, प्रतीकात्मक संरचना और परंपरागत ज्ञान-प्रणाली को सुरक्षित रखने वाले मौखिक सांस्कृतिक ग्रंथ के रूप में प्रतिष्ठित होते हैं।

निष्कर्ष

मुक्लोम उप-जनजाति के कुंगटॉम पर्व से संबंधित लोकगीत केवल एक उत्सवपरक अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि वे समाज के सामाजिक एवं सांस्कृतिक दर्शन को समग्र रूप में प्रतिबिंबित करने वाले मौखिक पाठ हैं। इन लोकगीतों के माध्यम से कृषि आधारित जीवन-पद्धति, ऋतु-चक्र, सामूहिक श्रम, स्वच्छता और सामुदायिक उत्तरदायित्व जैसी सामाजिक अवधारणाएँ सहज रूप से अभिव्यक्त होती हैं। गीतों में स्त्री की भूमिका को गृहस्थ जीवन, कृषि उत्पादन और पारंपरिक आतिथ्य संस्कार की संवाहक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे समाज में उसकी गरिमामय और केंद्रीय स्थिति स्पष्ट होती है।

कुंगटॉम लोकगीतों में सामुदायिक जीवन की भावना विशेष रूप से उभर कर सामने आती है, जहाँ ग्राम परिषद (पांग) के बुजुर्गों का मार्गदर्शन, युवकों की सक्रिय सहभागिता और स्त्रियों का सहयोगात्मक योगदान एक समन्वित सामाजिक संरचना का निर्माण करता है। साथ ही श्रम और कृषि को केवल आर्थिक गतिविधि न मानकर सामाजिक प्रतिष्ठा और सामूहिक पहचान से जोड़ा गया है। सांस्कृतिक दृष्टि से ये लोकगीत प्रकृति, मानव और विश्वास-प्रणाली के बीच संतुलित सह-अस्तित्व को दर्शाते हैं, जिसमें ऋतु परिवर्तन, प्राकृतिक संकेत और अनुष्ठानिक क्रियाएँ सांस्कृतिक प्रतीकों का रूप धारण कर लेती हैं ।

अतःयह कहा जा सकता है कि कुंगटॉम पर्व से जुड़े लोकगीत मुक्लोम समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना, नैतिक मूल्यों और परंपरागत ज्ञान-प्रणाली के जीवंत दस्तावेज हैं। ये लोकगीत न केवल अतीत की स्मृतियों को संरक्षित करते हैं, बल्कि वर्तमान सामाजिक जीवन को दिशा प्रदान करते हुए भविष्य की पीढ़ियों तक सामूहिक अनुभव और सांस्कृतिक पहचान को निरंतर बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संदर्भ

1) एम. मजूमदार, अरुणाचल प्रदेश के चांगलांग जिले के तांग्सा लोगों के बीच भोजन, संस्कृति और समाज, संस्करण: 1995
2) माता प्रसाद, मनोरम भूमि अरुणाचल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण: 1995
3) आलोक सिंह, पूर्वोत्तर की जनजातियाँ और उनका लोकजीवन, यश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण: 2021
4) वीरेंद्र परमार, अरुणाचल प्रदेश: लोकजीवन और संस्कृति, हंस प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण: 2021
5) रेशमा रेखुंग, अरुणाचल प्रदेश में तांग्सा जनजाति की लोककथाएँ: एक सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन, हिमाचल प्रदेश केंद्र विश्वविद्यालय, वर्ष: 2023